IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

आदिवासी महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषणात्क अध्ययन

Hemlata Baghel[1] and Dr. Pallavi Nagar[2]
M.ED. Student, DAVV University, Indore, MP, India[1]
Professor, Arihant College, DAVV University, Indore, MP, India[2]

सार

आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विष्लेषणात्क अध्ययन किया है, आदिवासी समुदायों के सदस्यों को षिक्षित बनाने और उन्हें समाज में सम्मानित नागरिक के रूप में स्थान देने के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक उत्थान की दिषा में महत्वपूर्ण कदम है। हमने विभिन्न आदिवासी समुदायों की महिलाओं के षिक्षा स्तर , शैक्षिक सुविधाओं के उपलब्धता, षिक्षा के प्रति रुझानों, षिक्षा के लाभों और समस्याओं की समीक्षा की है। इस अध्धयन के परिणाम आदिवासी महिलाओं के षिक्षित होने के लाभों को प्रमाणित करेंगे। और उन्हें समृध्दि और सामाजिक समानता तक पहुंचाने के लिए नीतियों का सुझाव देने में मदद करेंगे। जनसंख्या की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए उनकी भौगोलिक स्थिति, आकार और संसाधनों की कमी के संदर्भ में यह अध्ययन करने का निर्णय लिया गया कि, सभी प्रखंडों के गांव से 100 यादृच्छिक रूप से चयनित आदिवासी विवाहित महिलाओं को मल्टीफेज रैंडम सैंपलिंग विधि द्वारा चुना गया डॉटा ने महिलाओं का व्यक्तित्व डेटा शामिल था षिक्षा और जनसंख्या के विभिन्न पहलूओं पर जागरूकता के आंकड़े बहुप्रतिक्रिया प्रकार के थे। जिन्हें कोड संख्या के साथ दर्ज किया गया था।

खोजषब्द–आदिवासी,षैक्षिक,महिलाओं

परिचय

दुनिया के परिदृष्य का हर घटक जीवित और निर्जीव दोनों समय के साथ तेजी से बदल रहा है, निर्जीव परिवर्तिनों के उद्वाहरणों में ध्रुवीय बर्फ का पिघलना शामिल है। जिसके कारण महासागरों में वृध्दि होती है। सुनामी,भूकंप और अप्रत्याषित स्थानों में प्रजातियों का विलुप्त होना। दुनिया भर में जीवित प्रजातियों के अस्तित्व के लिए प्राकृतिक लड़ाई भी कई अकल्पनयी परिवर्तनों का कारण बनती है। जैसा कि बाहरी हस्तक्षेप है। छोटे देषों को स्थिर करने के लिए सुधारात्मक उपाय सटीक रूप से किये जाते हैं। उपर वर्णित परिवर्तनों की तरह परिवर्तन होते हैं। लेकिन भारत जैसे देष में उन पर किसी का ध्यान नहीं जाता है जहां कई अलग अलग भौगोलिक, सांस्कृतिक,सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र है। ये बदलाव एक प्रमुख राष्ट्रीय मुददे में परिणित होते हैं, जबतक यह लाईलाज बीमारी के बिन्दू तक नहीं पहुच जाता तब तक रोग के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते हैं।

अलीराजपुर एक जनजातीय जिला है। अलीराजपुर जिला 17 मई 2008 को झाबुआ जिले से लिया गया था यह गुजरात और महाराष्ट्र की सीमा के पास, मध्यप्रदेष के मालवा क्षेत्र में स्थित है। इस जिले की भौगोलिक स्थिति पहाड़ी है। और यहां की अधिकांष आबादी आदिवासी लोगों की है जो अलीराजपुर शहर के आसपास के छोटे गांव मे रहते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार अलीराजपुर जिले को कुल क्षेत्रफल 3,182,00 वर्ग कि.मीटर है। अलीराजपुर जिला पूर्व में धार एवं बड़वानी जिले से, पष्चिम में गुजरात से, उत्तर झाबुला जिले से और दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य से घिरा हुआ है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

आदिवासी महिलाओं की शैक्षिक स्थिति–

अनुसूचित जनजाति की आर्थिक और सामाजिक स्थिति के उन्नयन के लिए षिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान है, षिक्षा न केवल आर्थिक विकास के लिए बल्कि आदिवासी समुदायों की आंतरिक शक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। भारत में पिछड़े समूह के बीच साक्षरता और षिक्षा सामाजिक और आर्थिक विकास के शक्तिषाली साधन हैं। जनजातीय न केवल सामान्य आबादी और साक्षरता और षिक्षा में अनुसूचित जाति की आबादी के बीच पिछड़ा हुआ है। यह असमान्ता अनुसूचित जनजाती की महिलाओं में और भी अधिक उल्लेखनीय है। जिनकी साक्षरता दर देष में सबसे कम है। षिक्षा एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति और समाज व्यक्तिगत दान में सुधार कर सकते हैं, बाधाओ ंको दूर कर सकते हैं यह पुरूषों के लिए नहीं बल्कि आदिवासी महिलाओं के लिए भी लागू है। जनजातीय महिलाओं में साक्षरता दर और षिक्षा का परिदृष्य तुलनात्मकरूप से कम है, विकास के लिए आधिक ध्यान देने की आवष्यकता है।

साहित्य की समीक्षा–

डॉ.रूम कमल कौर (2020) यह लेख आदिवासी महिलाओं में षिक्षा की भूमिका पर चर्चा करता है। जो विकास के विभिन्न स्तरों पर है। पहले सरकार के पास उनकी षिक्षा के लिए कोई सीधा कार्यक्रम नहीं था। लेकिन बाद के वर्षों में आरक्षण नीति में कुछ बदलाव किये गये हैं आदिवासी महिलओं में षिक्षा के निम्न स्तर के कई कारण हैं औपचारिक स्कूल बच्चों के लिए कोई विषेष रूचि नहीं रखते हैं।

मुकेष कुमार (2018) षिक्षा मानव की एसी मूलभूत आवष्यकता है जो उसके बौधिक विकास, समाज के, गांव के , जिले के , प्रदेष के और देष के आर्थिक ,राजनीतिक,सामाजिक एवं औद्योगिक विकास में सहायक होती है। पौधों का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्य का विकास षिक्षा द्वारा होता है। यह निवेष के लोक का मत है अरस्तु के अनुसार– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है षिक्षा के अभाव में मानव जीवन की कल्पना करना असंभव है।

आज़ाद अहमद अंद्राबी, (2014) षिक्षा विकास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में उद्यम करने के लिए पर्याप्त दक्षता प्रदान करती है। राज्य की अधिकांष आदिवासी महिलाएं निरक्षर हैं। नामांकन कम है और स्कूल छोड़ने की दर अधिक है। आदिवासी महिलाओं के लिए प्रासंगिक पाठयक्रम , अधिक आदिवासी षिक्षकों,महिलाओं के लिए अलग शोचालय बेहतर षिक्षण विधियों , स्कूल की दूरी कम करने और लड़कीयों की षिक्षा की लागत को कम करने के माध्यम से षिक्षा प्रणाली के विस्तार और सुधार की तत्काल आवष्यकता है।

डॉ.नीरजा. पी (2011) षिक्षा प्रणाली को एक व्यक्ति को हमें बदलती गतिषील दुनिया की जरूरतों के अनुकूल बनाना चाहिए शैक्षिक प्रणाली में बदलाव से सामाजिक अंतराल को भी कम किया जाना चाहिए ताकि किसी भी कौषल को हासिल करने में किसी भी हद तक उचित मान्यता को सक्षम किया जा सके। पूरे भारत में आदिवासी समुदाय को विभिन्न प्रकार के अभावों का षिकार होना पड़ा है। जैसे भूमि अन्य संसाधनों से अलगाव।

भसीन, (2007) ने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों याने लदाख, उत्तर पूर्वी क्षेत्र, राजस्थान में आदिवासी महिलाओं के बारे में अपना अध्ययन किया है। और उन्होने पाया कि आदिवासी समुदायों में आदिवासी महिलाओं का बहुत महत्व है। आदिवासी समुदाय बेटी के जन्म को अभिषाप नहीं मानते।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

दहेज प्रथा नहीं है और लड़की को अपना पति चुनने का अधिकार है, तलाक आसान और सुरक्षित है। नारी शक्ति का विस्तार सामाजिक या राजनीतिक क्षेत्र तक नहीं है उनकी आर्थिक शक्ति का विस्तार सामाजिक या राजनीति क्षेत्र तक नहीं है।

मित्रा (2007) ने सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाओं के संदर्भ में , मुख्य धाराओं के हिन्दूओं की तुलना में भारत में अनुसूचित जनजाति के बीच महिलाओं की स्थिति का विष्लेषण किया है अध्ययन से पता चलता है कि, उनके समुदाय में आदिवासी महिलाओं की उच्च स्थिति है। और जनजाती समुदायों में बिल्कुल भी लेंगिंक भेदभाव नहीं है।

पदृति –

वर्तमान विषय का उद्देष्य जनजातीय महिलाओं के बीच षिक्षा और जनसंख्या जागरूकता का अध्ययन करना है। अलीराजपुर एक जनजातीय जिला है। अलीराजपुर जिला 17 मई 2008 को झाबुआ जिले से लिया गया था यह गुजरात और महाराष्ट्र की सीमा के पास, मध्यप्रदेष के मालवा क्षेत्र में स्थित है। इस जिले की भौगोलिक स्थिति पहाड़ी है। और यहां की अधिकांष आबादी आदिवासी लोगों की है जो अलीराजपुर शहर के आसपास के छोटे गांव मे रहते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार अलीराजपुर जिले को कुल क्षेत्रफल 3,182,00 वर्ग कि.मीटर है। अलीराजपुर जिला पूर्व में धार एवं बड़वानी जिले से, पष्चिम में गुजरात से, उत्तर झाबुला जिले से और दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य से घिरा हुआ है।

जनसंख्या की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए उनकी भौगोलिक स्थिति, आकार और संसाधनें की कमी के संदर्भ में यह अध्ययन करने का निर्णय लिया गया कि सभी प्रखंडों के गांवों से लगभग 100 यादृष्छिक रूप से चयनित आदिवासी महिलओं को मल्टीफेज रैंडम संम्लीक विधि द्वारा चुना गया है। बेहतर और वास्तविक प्रतिक्रिया पाने के लिये विषय केवल विवाहित महिलाओं तक ही सीमित थे।

डेटा विष्लेषण–

उत्तरदाताओं से एकत्र किये गये डेटा प्रकृति में गुणात्मक ओर मात्ररात्मक दोनों थे जागरूकता डेटा प्रकृति में गुणात्मक थे। सामाजिक–आर्थिक डेटा में महिलाओं का व्यक्तिगत डेटा शामिल था। षिक्षा और जनसंख्या के विभिन्न पहलूओं पर जागरूकता के आंकड़े बहुप्रतिक्रिया प्रकार के थे। जिन्हें कोड संख्या के साथ दर्ज और विष्लेषण किया गया था।

तालिका–1 आदिवासी महिलाओं का परिवार–

N=200 (सभी विषयों का अध्ययन किया गया)

क्रमांक	विषेषता	विनिर्देष	संख्या	प्रतिषत
1	परिवार का प्रकार	नाभकीय ———————— संयुक्त	80.4 ———————— 119.6	40.2 ———————— 59.8
2	परिवार के कुल सदस्य	03 के भीतर ———————— 4 से 6	32.8 ———————— 54	16.4 ———————— 27.0
		7 से 10	96.4	48.2
		10 से अधिक	16.8	08.4

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 59.8 प्रतिषत आदिवासी परिवार संयुक्त परिवार के थे, ओर शेष एकल परिवार के थे, या जिनके बच्चे नहीं थे। परिवार के सदस्यों की कुल संख्या 7 से 48.2 प्रतिषत अध्ययन विषयों के भीतर थी, और 16.4 प्रतिषत छोटे परिवार थे।

शैक्षिक स्थिति के आंकड़ों का विष्लेषण–

अध्ययन के विषयों के साथ वास्तविक साक्षात्कार द्वारा प्रासंगिक जानकारी एकत्र की गई थी उन्हें सारणी बध्द किया और उनका विष्लेषण किया गया।

तालिका–2 अध्ययन किये गये विषयों का शैखिक स्तर –

N=200 (सभी विषयों का अध्ययन किया गया)

क्रमांक	विष्टिता	संख्या	प्रतिषत
1	कोई पढ़ाई नहीं	27.2	13.6
2	लोअर प्रमायमरी कक्षा III तक)	12.8	06.4
3	उच्च प्राथमिक (कक्षा IVऔर कक्षा V)	20.4	10.2
4	मध्य अंग्रेजी (कक्षा VI और कक्षा VII)	86.4	43.2
5	हाई स्कूल कक्षा 8वीं से कक्षा 10वीं तक	24	12.0
6	+2 (कक्षा XI और कक्षा XII)	22.4	11.2
7	+3 (स्नात्क तक 3 वर्ष)	4.4	02.2
8	व्यवासिक 0	2.4	01.2

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि अध्ययन के 13.6 प्रतिषत विषय पूरी तरह से अषिक्षित थे। 16.6 प्रतिषत ने प्राथमिक स्तर तक षिक्षा प्राप्त की है। अधिकांष विषय जोकि 43.2 प्रतिषत अंग्रेजी कक्षाओं तक षिक्षित थे। हाई स्कूल से लेकर स्नात्क स्तर तक की हिस्सेदार केवल 25.4 प्रतिषत थी। व्यवासियक समूह 1.2 प्रतिषत का गठन किया

तालिका–3 शैक्षिक योग्यता के अनुसार वर्गीकरण

N=200 (सभी विषयों का अध्ययन किया गया)

क्रमांक	विषेषता	विनिर्देष	संख्या	प्रतिषत
1	षिक्षित	हाई स्कूल से परे	53.2	26.6
2	आंषिक रूप से षिक्षित	पढ़े लिखे नहीं लेकिन अनपढ़ नहीं	119.6	59.8
3	निरक्षर	कभी स्कूल नहीं गया।	27.2	13.6

यह पाया गया कि अध्ययन विषयों के बहुमत □(59.8 प्रतिषत) आंषिक रूप से षिक्षित थे। 13.6 प्रतिषत निरक्षर थे और 15.6 प्रतिषत ने हाई स्कूल से परे षिक्षा प्राप्त की थी।

आदिवासीयों की शैक्षिक स्थिति में सुधार के सभी प्रयास अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं।

आदिवासी स्कूलों में योग्य षिक्षकों की भर्ती और षिक्षा का माध्यम लगातार समस्या है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

निष्कर्ष–

आदिवासी समस्यओ ंको उनके जीवन के गुणवत्ता में सुधार, गरीबी में कमी, उत्पादकता के स्तर को बड़ोने , निरक्षरता को दूर करने, शोषण को खतम करने , आदिवासी क्षेत्रों में सहायक बुनियादी ढांचे आदि के लिए विकास उन्मुख दृष्टिकोण से देखने की तत्काल आवष्यकता है। कुछ मूलभूत सेवाएं जैसे पेयजल, स्वास्थ्य, आवास,पोषण, ग्रामीण सड़के आदि उन्हें प्रदान करने की आवष्यकता है। साथ ही महिलाओं को अपने बारे में उनकी क्षमताओं पर विषवास दिलाना तथा महिलाओं में अपने बारे वहीं विष्वास विकसित करना एक चुनौती है। यह कार्य वास्त में कठिन है क्योंकि सदियों पुराने विष्वासों को तोड़ना एक कठिन कार्य है। आदिवासी महिलाओं के शैक्षिक स्तर का बड़ाना ही एक मात्र कुंजी है इसे रेलियों, जागरूकता षिविरों, प्रषिक्षणों आदि द्वारा भी पूरा किया जा सकता है।

संदर्भ

1. डॉ.रूप कमल कौर (2020) जनजातीय महिला सषक्तिकरण में षिक्षा की भूमिका खण्ड 6 अंक 5 2020 IJARIIE-ISSN (O)-2395-4396
2. मुकेष कुमार (2018) आदिवासी बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन झारखण्ड के संदर्भ बहुविषयक शैक्षणिक अनुसंधान।
3. आज़ाद अहमद अंद्राबी (2014) '' जम्मू और कष्मीर जनजातीय महिलाओं के शैक्षिक विकास का एक अध्ययन आर्टस ऑफ जनरल '' साईंस एण्ड कामर्स, आई एस एस एन 2231– 4172
4. सरिता (2012) जनजातीय षिक्षा का एक आलोचनात्मक अध्ययन संदर्भ विषेष के महिलओं में प्रषांत विष्वविद्यायल, उदयपुर, राजस्थान में जनजातीय विकास पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी। पर :– विष्वविद्यालय प्रषांत , उदयपुर, राजस्थान वाल्यूम–1
5. डॉ.नीरजा. पी (2011) सामाजिक विज्ञान और मानवता पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन IPEDR खण्ड 5 (2011)
6. भसीन वी. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति, स्टडी। घर कॉम विज्ञान–कमला राज इंटरप्राईजेसे 2007,1(1):1–16
7. मित्रा, अपर्णा की महिलाओं में जातीयों अनुसूचित स्थिति भारत में जनजातियां–सामाजिक अर्थषास्त्र– जनरल। का 2007 को एकसेस किया गया।
8. आदिवासी भारत में राधा एस एन साक्षरता भारत में जनजातीय परिवर्तन में एक मूल्यांकन। बुददेव चौधरी द्वारा संपादित। इंटरइण्डिया प्रकाषन, नई दिल्ली 1982